

हन्ना रौ बिश्वाश



हन्ना रौ बिश्वाश

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india





<http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/>

You may not use this work for commercial purposes. You may adapt and add to this work, but you may distribute the resulting work only under the same or similar license to this one. You must keep the copyright and credits for authors, illustrators, etc.

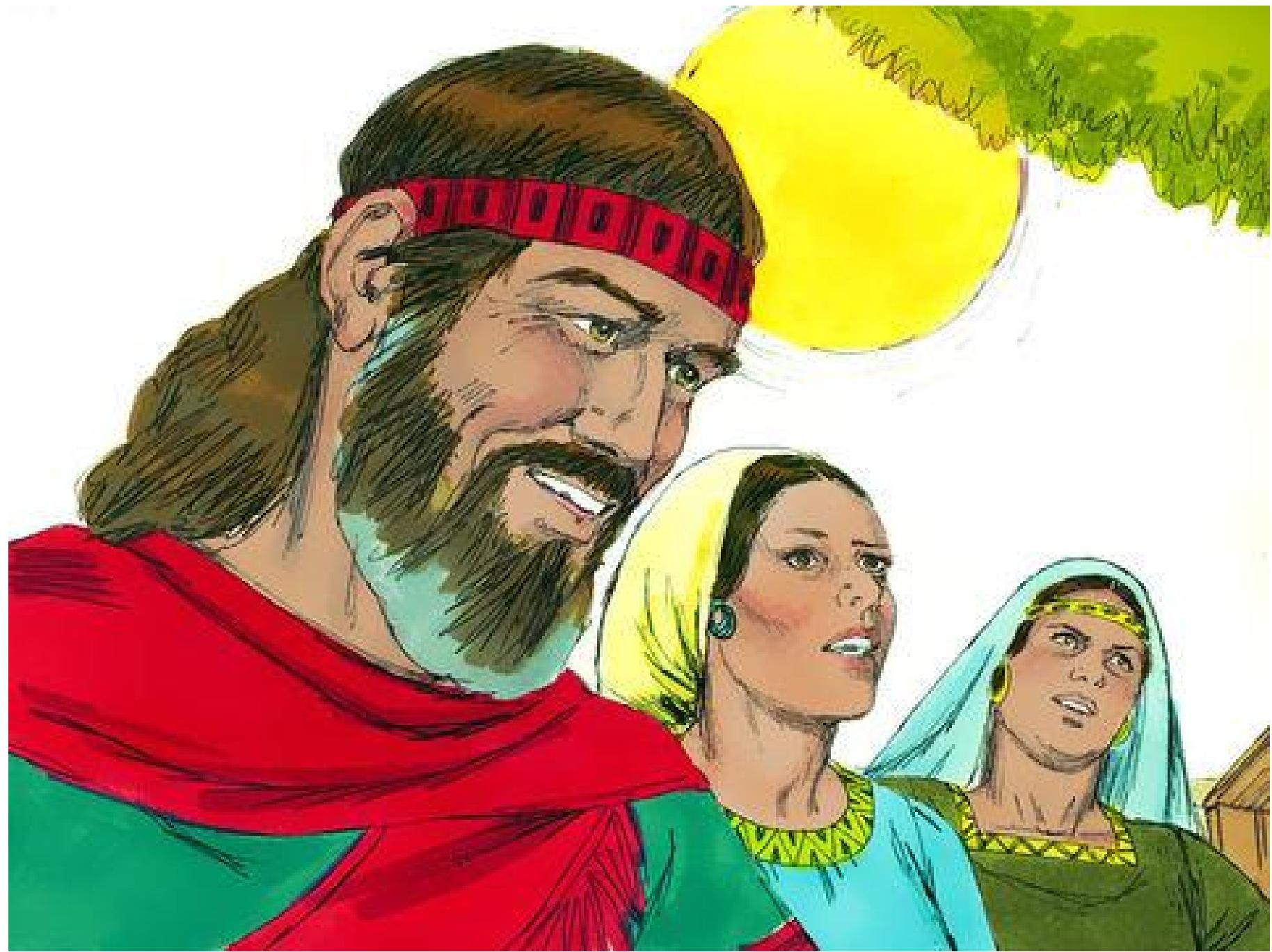
Big Book in Bangani language
Orange Level Book

प्रकाशण:-

NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

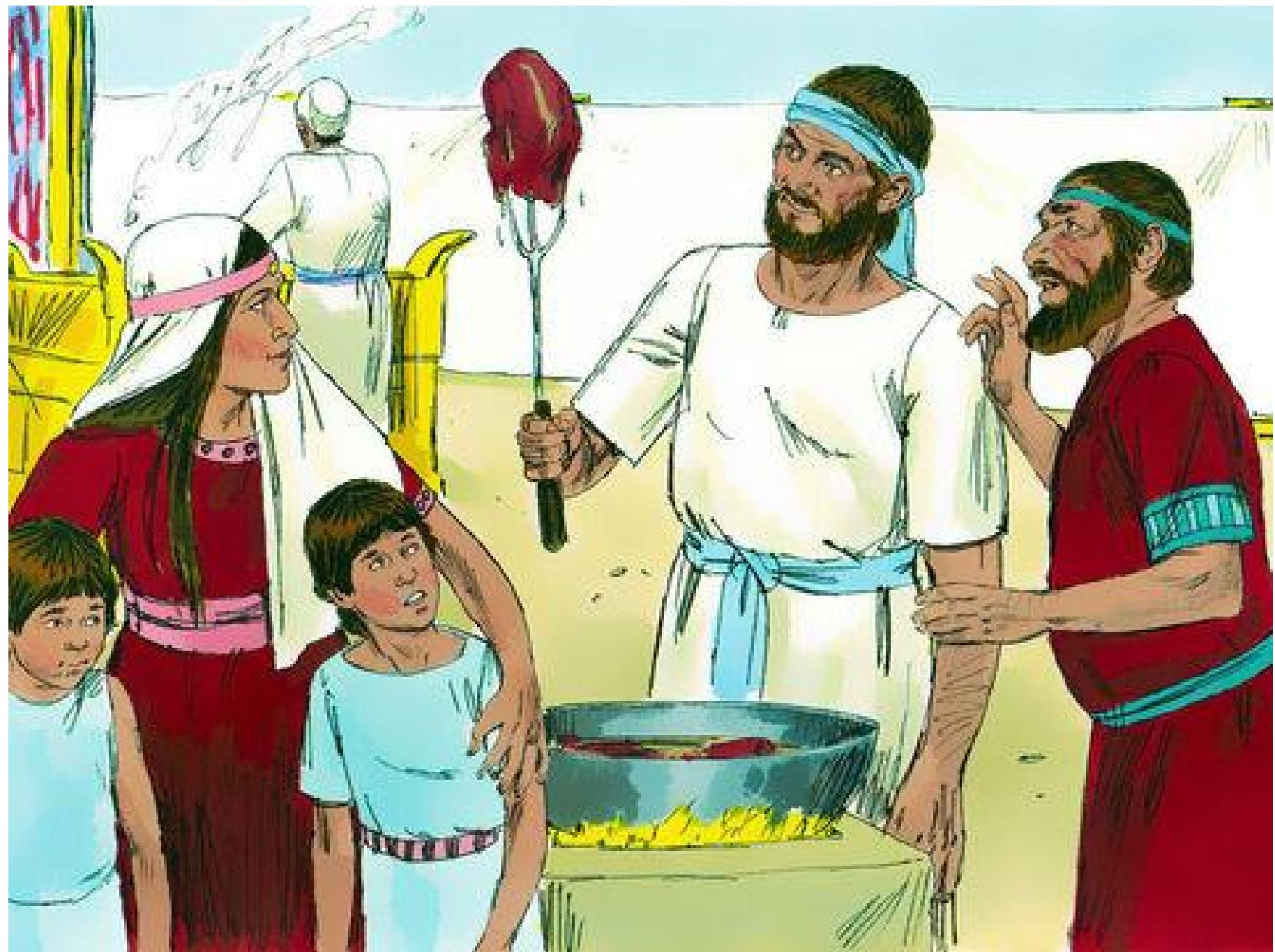
दो बात

हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है जिसमें हन्ना के विश्वास के बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सके। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।



रामा गाउँ दि एल्काना नौऊँ रौ एक माणूछ रौऐ थौ।

तेसरी दुइ छेउड़ थी, एक हन्ना औज़ि दुजी
पनिन्ना। पनिन्ना रै तै माऊँ उवै औज़ि हन्ना रै कुछु
बि ना उवै। एल्काना हर साल शीलो दि परमेश्वर रै
बवन दि बेट चौड़ान्दै डै थौ।



ज़ेत्रा-ज़ेत्रा एल्काना बेट चौड़ा थौ, तेत्रा-तेत्रा सेउ
आपड़ी छेउड़ औज़ि आपडै सारै पेटारौउँ कै दाण दै
थौ, पर हन्ना कै सेउ दुगुणौ दाण दै थौ, केलाकि
सेउ तीं कौइ बौरी प्यार कौरै थौ। पर परमेश्वरेइ
तिरी कुख बन्द थी कौरियौन्दि ।



ज़ेत्रा हन्ना परमेश्वर रै बवन दि डै थी, तेत्रा पनिन्ना
तीं बौरी चिड़ायै थी, केलाकि परमेश्वरेइ तिंरी कुख
बन्द थी कौरियौन्दि, एज़ी बौजै कौइ सै लैरै थी
औज़ि खाणौ बि ना खायै थी, पर एल्काना तीं
सौमज़ा थौ कि तू केलाइ लैरै औज़ि तु उदास
केलाइ, का आउं ताउंकै दश बेटाउं कौइ बौड़िया
ना नौथि?



ਤੈਬੈ ਹਨਾ ਬਿਤੱਝੀ, ਔਜ਼ਿ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰੈ ਬਵਨ ਦਿ
ਡੇਇਯੈ ਜਿਉ ਦਿ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੌਇ ਪ੍ਰਾਥਨਾ ਕੌਰ ਦਿ
ਲਾਗੀ, ਸੇਜੈ ਬੌਕਤੇ ਦਿ ਏਲੀਯਾਜਕ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਰੈ ਬਵਨ
ਰੈ ਫੁਵਾਰੈ ਕਾਈ ਏਕ ਖੁਸ਼ੀ ਮਾਈ ਬੋਸ਼ਾਨਦੈ ਥੈ। ਔਜ਼ਿ
ਹਨਾ ਸਿਨਕੀ ਸਿਨਕਿਯੈ ਲੇਰ ਦਿ ਲਾਗੀ, ਔਜ਼ਿ
ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਕੌਇ ਮਨਨਤ ਮਾਂਗ ਦਿ ਲਾਗੀ। ਏ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ
ਆਪਡੀ ਦਾਸੀ ਰੈ ਫੁਖ ਦੇਖ, ਔਜ਼ਿ ਆਪਡੀ ਦਾਸਿਏਡ
ਨ ਬਿਸਰੈ।



आपड़ी दासी के एक बेटा दै, तै आउँ तेस ज़िन्दगी
बर ताउँइं के देऊ, जौ हन्ना एज़ी प्राथना रौइ थी
कौर दि लागी, तेत्रा एलीयाजक रौ थौ तीं देखदै
लागी, प्राथना कौरदु बैरे हन्ना रै ओठ रौऐ थै इल्दै
लागी, पर आवाज़ ना रौइ थी आँदि लागी, केलाकि
सै जिउ दि प्राथना रौइ थी कौर दि लागी ।



एलीयाजकेइ सौमज्जौ कि ऐ नौशे दि, एज़ी बौज़ै
कौइ एलीयाजकेइ हन्ना आरि बोलौ कि तु केत्रा
जौउं रौयै नौशे दि। डेइयौ आपड़े नौशेइ पोरु
बीज़ार, तैबै हन्नाइ बोलौ, आउं तै दुख्वी, मुइं
कुछु बि नौशौ ना नौथि कियौन्दौ, मुइं तै आपड़े
ज़िये रि बुशै परमेश्वर आरि बोली, मूँ रौदि छेउड़
ना सौमज्जु।



तैबै एलीयाजकेइ बोलौ, तु बौड़िया कौइ डेऊ,
इस्ताइल रौ परमेश्वर तेरी ज़िये रि इछा पुरी कौरै।
तैबै हन्ना तेत्कै कौइ पोरु डेइ, औज़ि डेइयौ खाणौ
खाओ, तेतबासियै सै केत्राइ बि उदास ना उइ, दुज़ै
दुसै सै सारै राती बिउज़ियौ, परमेश्वर रि महिमा
कौरियौ सै लोग आपडै गौरै डै।



गौर के डेझ्यौ हन्ना गौरकेड़ी उइ, तैबै तिंरौ एक
बेटा उवौ, औज़ि तिंयै तेसरौ नौऊँ शमुएल थौ,
केलाकि सै बोल्दि लागी, मुझं एउ परमेश्वर कौइ
माँगौ, तिणी मुकै देणौ, तैबै एल्काना हर साल बाशी
आपड़े पुरै पौरिबार रै साथै परमेश्वर के बेट
चौड़ाणे खि डैओ ।



पर हन्ना आपडै पति एल्काना आरि एशौ बोलियौ
गौरिके रौइ, जौ माऊँ दूद पिणौ पोरु छोडै लौ, तैबै
निऊँ आउँ एस जेसकौइ सेउ परमेश्वर रै सामणै डै
लौ, औजि सेउ सौदाइ तेथिके रौयै लौ, तैबै
एल्कानाइ बोलौ, जेशौ ताउँ कै बौडिया लागै तेशौइ
कौर, बस एत्ती औणौ चाइं, कि परमेश्वर आपडै
बचनेइ पुरौ कौरै ।



औज़ि ज़ौ हन्नाइ आपड़ौ बेटा कौइ दूद पियाणौ
पोरु छुड़ाओ, तैबै तियै सेउ औज़ि तेसरै साथै चीन
बाश्टू, औज़ि दश किलो पिदियान, औज़ि थोड़ौ
तेल आपडै साथै गिणियौ परमेश्वर रै बवन दि डेइ।
तैबै तेत्कै पौइंच्चियौ, सेउ माऊँ एलीयाजक काइ
गिणौ, औज़ि तेसकै देणौ, औज़ि तेसारी बोलौ,
आउँ सेज़ी छेउड़ जुण्ज़ी एत्कै खौड़ी उइयौ
परमेश्वर कौइ प्राथना कौरै थी।



एउ सेउइ माऊँ, जेस खि मुइं प्राथना की थी, एज्जी
बौजै कौइ आउँ एस परमेश्वर कै देउ, ताकि एउ
आपडै जिन्दगी बर परमेश्वर रौइ औयै लौ तैबै
सै परमेश्वर रि महिमा कौरियौ पोरु डेइ औज्जि
सेउ माऊँ परमेश्वर रै बवन दि, परमेश्वर रि सेवा
कौरदै लागौ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI संस्थान के द्वारा तैयार की गई है।

हम मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में व्यस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मातृभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,,



This book was created with some Bloom Enterprise features enabled at no cost in order to support projects solely funded by the local community.